पवन: तेरा घर यहाँ पर नहीं है? कहाँ है? अरे कहीं तो होगा!
अच्छा हम एक काम करते है कि शहरों के नाम लेते हैं।
और अगर तेरा घर वहाँ पर हुआ, तो हाथ उठाके ऐसे
कर देना। कैसे? हाँ। दिल्ली? मेरठ? फ़रीदाबाद?
ग्वालियर। झांसी, पटियाला, अमृतसर, जोधपुर,
जयपुर, श्रीनगर, पठानकोट, शिमला, अम्बाला?

मुसाफ़िर १: बड़ौदा?

मुसाफ़िर २: रामपुर?

मुसाफ़िर ३: अरे, देहरादून क्या?

मुसाफ़िर ४: कसौली?

मुसाफ़िर ५: प्रतापगढ़?

पवन: आप प्रतापगढ़ से हैं?

मुसाफ़िर ५: हाँ!

पवन: हम भी!

मुसाफ़िर ५: सच?

पवन: बजरंग बली की कसम (क़सम)। नीली पाठक के पास रहते हैं।

क़सम, قسم
promise, vow, oath, f.

पाठक, پاٹھک
main gate, f. (usually m.)

मुसफ़ीर ५: अरे ऊ (वह) तो हमार (हमारा) ससुराल है! ई (यह) सोचे (सोचने) से तो आप हमारे संबन्धी हुए!

ससुराल, سسرال
in-laws' house, m.

संबन्धी, سمبندھی
relative, adj. and m.

पवन: आजकल दिल्ली में रहते हैं।

मुसाफ़िर ५: दिल्ली में क्यों? नौकरी या छोकरी?

नौकरी, نوکری
employment, f.

छोकरी, چھوکری
girl, f.

पवन: बड़ी लंबी कहानी है भैय्या।

मुसाफ़िर ५: बताओ, हमें कौनसी बस पकड़नी है भाई?

मुसाफ़िर २: बताओ भैय्या!

मुसाफ़िर ३: बताइये तो?

पवन: अरे बोलती तो है नहीं। हमारी कहानी सुनेगी?

पवन: हम हैं पवन। पवन कुमार चतुरवेदी। पर प्रेम से सब बजरंगी बुलाते हैं हमें। तू मुझे भैय्या। कितने साल की है तू? छः। तो जभी भी तू बोलेगी, तो मुझे मामा बुलाना। मामा ठीक रहेगा।

मामा, ماما
maternal uncle, m.

पवन: हमारे पिताजी दिवाकर चतुरवेदी प्रतापगढ़ के पोस्टमास्टर थे।

[गाना: ए ले ले ले ले ले ले ले रे]

पवन: जैसा नाम, वैसा काम। चारों वेदों के ज्ञानी थे हमारे बाऊजी। पर हमारे लिये चार का पहाड़ा भी पार करना मुश्किल था।

वेद, وید
knowledge, Veda, m.

ज्ञानी, گیانی
scholar, intellectual, knower, m.

पहाड़ा, پہاڑا
multiplication table, m.

दिवाकर: चार अट्ठे!

अट्ठा, اٹھا
multiple of eight, m.

पवन: ब... ब... बाईस!

दिवाकर: हंऽऽ!

पवन: नहीं! पच्चीस!

दिवाकर: हंऽऽ!

पवन: नहीं! सत्ताईस! अट्ठाईस! तीस! बाऊजीऽऽऽ!

दिवाकर: हंऽऽ!

पवन: बाऊजी के लिये जितनी ज़रूरी मन की चुस्ती, उतनी ही तन की तनदुरुस्ती।

मन, من
mind, heart, m.
चुस्ती, چستی
agility, alertness, smartness, f.
तन, تن
body, m.
तनदुरुस्ती, تندرستی
vigor, health, f.

दिवाकर: शाबाश। चलो। शुरू कर।

मुसाफ़िर: शाबाश! पंडित प्लस पहलवान! वाह!

पहलवान, پہلوان
wrestler, body builder, m.

पवन: और हम पहलवानी में भी फ़ेल।

दिवाकर: हँसना नहीं है। पवन! यह ना सुधरेगा। तुम नहीं सुधरोगे। कुछ नहीं कर सकते हो।

सुधरना, سدھرنا
to improve, to be reformed, to be corrected, v.i.

पवन: अब कुश्ती में हमें गुदगुदी होती, तो हम का (क्या) करें भैय्या?

कुश्ती, کشتی
wrestling, f.
गुदगुदी, گدگدی
tickling, f.

पवन: पर चतुरवेदी जी के लिये इतनी शोभा काफ़ी नहीं थी। प्रापगढ़ के शाखा के प्रमुख भी थे हमारे बाबूजी।

शोभा, شوبھا
grace, glory, splendor, elegance, brilliance, f.

पवन: न पंडितैन में न पहलवानी में न नेतागिरी में। हमें बाऊजी के किसी भी सब्जेक्ट में इंटरेस्ट नहीं था। इस लिये तो हमे विसेस (विशेष) नाम दिये थे।

पंडितैन, پنڈتین
scholarship, wisdom, m.

मुसाफ़िर २: क्या?

पवन: जीरो (ज़ीरो)।

दिवाकर: क्या हुआ अब?

पवन: बाबूजी, फेल।

पवन: दसवीं तक पहुंचने में हमें बीस साल लग गये। फिर दसवीं से ग्रैजुएशन तक हम दस बार फेल हुए। अब तक तो बाऊजी भी हम पर गिव अप दे चुके थे।

दिवाकर: क्या हुआ?

पवन: बाबूजी, फेल।

दिवाकर: पास हुए?

पवन: फेल।

पवन: फेल।

पवन: बाबूजी, फेल।

पवन: फेल!

पवन: फेल!

पवन: बाबूजी, फेल।

पवन: दोस्तों ने कितना कहा कि नकल (नक़ल) करके पास हो जा बुरबक! हम ठहरे बजरंग बली के भक्त। हम ने कहा, फेल तो फेल – चोरी नहीं करेंगे। तो ग्यारहवीं बार पहुंच गये थे पर्दे में।

नक़ल करना, نقل کرنا
to copy, to imitate, to cheat, v.t.
बुरबक, بربک
stupid, idiot, adj. and m.
भक्त, بھگت
devotee, m.

दिवाकर: आइये, आइये, पधारिये। मैं निःसंदेह आप ने अपना खुद का फेल करने का रिकॉर्ड तो तोड़ ही दिया होगा।

पधारना, پدھارنا
to attend, to grace a place by arriving, v.i.
निःसंदेह, نسدیہ
certain, without doubt, adj.

पवन: बाबूजी...

दिवाकर: अरे, जब दस का आख़रा पूरा कर लिया था, तो काहे ग्यारहवीं बार हमारा नाम रौशन करने चले गये थे? काहे? एह? मान लिया, स्वीकार कर लिया हम ने, भई, कि तुम बुरबक, नालायक (नालायक़), और ब्लडी फ़ूल हो। जीरो हो तुम! जीरो!

काहे, کاہے
why, adv.
रौशन, روشن
illuminated, glorious, adj.
मानना, ماننا
to accept, v.t.
स्वीकार करना, سویکار کرنا
to accept, v.t.
नालायक़, نالائق
worthless, adj. and m.

पवन: सुनो तो...

दिवाकर: क्या सुनें? क्या सुनें, बताओ? दस बार फ़ेल हुए तुम, और बीस बार हम को फ़ेल किया।

पवन: सुनो तो सही बाबूजी...

सही, سہی
please, just, part. (compare सही, صحیح, correct, adj.)

दिवाकर: अरे सुनने, कहने को क्या बचा है, तुम बताओ हम को! हाँ, अगर कुछ हमारे लिये करना चाहते हो तो कृपा करो, यहाँ से चले जाओ, दिल्ली! सुना है, नालायकों की बहुत कमी है वहाँ। एक मित्र है हमारे पुराने वहाँ, दयानन्द जी। लगा देंगे कहीं।

कृपा, کرپا
kindness, pity, mercy, f.
मित्र, متر
friend, m.

पवन: बाबूजी हम पास हो गये!

मुसाफ़िर: क्या बात है!

मुसाफ़िर ५: अरे तो का (क्या) कहे तोहर (तुम्हारा) बाऊजी?

मुसाफ़िर ३: चतुरवेदी जी तो शॉक हो गये होंगे!

पवन: हमें पता था उन को शॉक लगेगा। लेकिन इतने ज़ोर से लगेगा, हम सोचे भी नहीं थे।

मुसाफ़िर २: क्यों? का (क्या) हुआ?

पवन: बाबूजी, हम जा रहे हैं दिल्ली।

पवन: और हम अपने पिताजी की आख़री इच्छा पूरा करने के लिये निकल पड़े। दयानन्द जी के पास।

इच्छा, اچھا
wish, desire, f.

[गाना: ऐसे है भैय्या बजरंगी]

कंडक्टर: भाई साहब, खुला नहीं है। इस में से पाँच रुपये, वह आप मैडम को दिजिये। मैडम, पाँच रुपये उन से ले लिजियेगा आप।

खुला, کھلا change, m.

पवन: जय श्री राम! आप के पास पाँच रुपये हैं, ताकि मैं आप को दस रुपये दे सकूँ?

रसिका: नहीं, नहीं है।

पवन: अरे, अब क्या होगा?

रसिका: कोई बात नहीं, तुम रख लो।

पवन: हम कैसे रख लें? इस में से पाँच रुपये आप के भी तो हैं।

रसिका: तो फिर मुझे दे दो।

पवन: कैसे दे दें? पाँच हमारे भी तो हैं।

रसिका: देखो भाई साहब, कोई बात नहीं। तुम रख लो। रैल्ली।

पवन: नहीं, हम कैसे रख लें? पाँच आप के भी तो हैं, न?

रसिका: तो फिर दे दो मुझे!

पवन: लेकिन पाँच हमारे भी तो हैं।

पवन: बहन जी! बहन जी! बहन जी! बहन जी! बहन जी! बहन जी!

रसिका: क्या?

पवन: यह आप के पैसे हैं न?

रसिका: नहीं चाहिये पाँच रुपये।

पवन: अरे, ले लिजिये, हाँ।

रसिका: तो फिर दे दो।

पवन: पूरे ले लिये? इस में आधे हमारे भी तो हैं न।

रसिका: एक काम करो। वह पानीवाला है न? उस से खुले पैसे ले आओ। जाओ।

पवन: भाई जी, दस रुपुये खुले होंगे आप के पास?

पानीवाला: यह लिजिये।

[कुश्ती की आवाज़ें]

रसिका: तुम! घर तक पहुंच गये! पीछा कर रहे हो मेरा?

पवन: नहीं बहन जी, हम तो, हम, हम...

रसिका: क्या हम हम हम? कहा था मैं ने, नहीं चाहिये पैसे?

दयानन्द: उसे जानती हो?

रसिका: मेरे बस में था। पीछा करते-करते घर तक पहुंच गये बदमाश!

पवन: बहन जी, हम बदमाश नहीं हैं! और ना ही हम किसी का पीछा कर रहे हैं। बजरंग बली कि कसम! हम तो प्रतापगढ़ से आये हैं, दयानन्द जी से मिलने!

दयानन्द: कौन हो तुम?

पवन: हम पवन चतुरवेदी, नीली फाटक वाले चतुरवेदी साहब के बेटे!

दयानन्द: चतुरवेदी जी के बेटे?

पवन: जी जी, ब... बजरंगी!

दयानन्द: आ हा हा! उतारो इस को।

सरस्वती: यह लिजिये भैय्या जी।

पवन: अरे बस।

सरस्वती: नहीं, नहीं, खाइये, गरम-गरम है। स्पेशल है हमारे यहाँ का। हम जब पराठे के लिये आलू उबालते हैं न, तो उसी समय उस में नमक डालते हैं। इसी लिये बनते इतने अच्छे। आप खाइये भैय्या जी।

पवन: क्या कोई माँस पका रहा है?

माँस, ماس
flesh, meat, m.

दयानन्द: साथ वाली हवेली में। मुहम्मडन हैं। सुबह-सुबह शुरू हो जाते हैं। हमारे हवेली में, हरवंश त्रिवेदी हवेली में, मैं ने तो साफ़-साफ़ कह दिया है, पराये धरम (धर्म) वालें को, कोई घर किराये पर नहीं देगा।

हवेली, حویلی
mansion, house, f.

पराया, پرایا
other, another's, foreign, outside, adj.

सरस्वती: भैय्या जी, आप यह तो बताइये कि आप काम क्या करते?

पवन: काम ढूंढ़ने तो हम दिल्ली आये हैं।

दयानन्द: अरे तेरे स्कूल में कोई नौकरी नहीं मिल सकती इसे?

पवन: अरे वाह आप भी?

रसिका: क्या?

पवन: आप भी अब तक स्कूल में पढ़ती हैं?

रसिका: पढ़ती नहीं, पढ़ाती हूँ।

दयानन्द: तुम कल रसिका के साथ इस के स्कूल चले जाना। आप को कोई न कोई नौकरी निकल आयेगी।

पवन: जी।

पवन: जय बजरंग बली की।

रसिका: यहाँ बंदर बहुत हैं। दिन भर क्या प्रणाम करते रहोगे?

प्रणाम, پرنام
reverential salutation, bowing with respect, a term used in greeting elders, m.

रसिका: यह लो। सोने से पहले चारपाई के नीचे लगा देना। यहाँ बंदर के साथ-साथ मच्छर भी बहुत हैं।

चारपाई, چارپائی
charpoy, cot, f.

पवन: एक मिनट।

पवन: हाथ दिजिये।

रसिका: एक्सक्यूज़ मी?

पवन: भरोसा रखिये। लिजिये न?

पवन: वन, दो, थ्री, चार, फाइव, पाँच।

रसिका: और हाँ। मेरा नाम बहन जी नहीं, रसिका है।